क्या परमेश्वर और विज्ञान में सहमति है?

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर बेंजामिन पियर्स के अनुसार, ''विज्ञान तथा धर्म का जन्म एक ही घर में हुआ था और उस घर में कोई फूट नहीं है। उनमें झगड़ा तो है और रहेगा भी; परन्तु इसे आरम्भ मनुष्य ने ही किया है, अर्थात यह झगड़ा अपने बड़प्पन के कारण नहीं बल्कि हमारे ज्ञान की कमी के कारण ही पैदा हुआ है।'' वास्तविक विज्ञान और सच्चे धर्म में झगड़ा उतना ही असम्भव है जितना दो समानांतर रेखाओं का मिलना। सच्चाई कभी भी अपना विरोध नहीं करती। परमेश्वर सच्चाई है (यूहन्ना 14:6), परमेश्वर पहला वैज्ञानिक भी है, और ''विश्वास का कर्त्ता और सिद्ध करने वाला'' (इब्रानियों 12:2) भी।

बिलाम की भविष्यवाणी की तरह समस्त प्रकृति में, सहज और अदम्य चिल्लाहट है: ''... अब यह कहा जाएगा, कि ईश्वर ने क्या ही विचित्र काम किया है'' (गिनती 23:23ख)। भजन 97:6 में इस्राएल के कवि ने गाया था, कि आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन करते हैं, जबकि ''दिन से दिन बातें करता है'' (भजन संहिता 19:2)। इन्सानी वैज्ञानिकों की प्राप्तियां आश्चर्यजनक तो हैं परन्तु सब सामग्रियों और वस्तुओं को बनाने और सब नियमों को रूप देने वाला सबसे बड़ा वैज्ञानिक वही है। महानतम व्यक्ति सृष्टि की किसी भी वस्तु की रचना नहीं कर सकते; वे केवल उन औज़ारों का इस्तेमाल कर सकते हैं जो परमेश्वर ने बनाए हैं। मनुष्य केवल परमेश्वर की सोच के अनुसार काम कर सकते हैं। जितना अधिक वे परमेश्वर के विचारों को खोज लेते हैं उतना ही अधिक उन्हें लगता है कि अभी बहुत कुछ और सीखना बाकी है। ''परमेश्वर की महिमा, गुप्त रखने में है परन्तु राजाओं की महिमा गुप्त बात का पता लगाने से होती है'' (नीतिवचन 25:2)।

1903 में पहला हवाई जहाज उड़ाने वाले विलबर और ओरविल राइट ब्रदर्स प्रशन्सा के पात्र हैं; परन्तु परमेश्वर जिसने वायु गतिविज्ञान बनाया, उनसे भी अधिक प्रशन्सा का पात्र होना चाहिए। विलियम हारवे की पुस्तक डिस्कवरी ऑफ सर्कुलेशन (1628) की प्रशन्सा संसार भर में होती है, परन्तु मुख्य रूप से इसका श्रेय उसे जाता है जिसने रक्त संचार प्रणाली बताई है। भजन लिखने वाले ने कहा है, ''मैं तेरा धन्यवाद करूंगा, इसलिए कि मैं भयानक और अद्‌भुत रीति से रचा गया हूं। तेरे काम तो आश्चर्य के हैं, और मैं इसे भली भांति जानता हूं'' (भजन संहिता 139:14)। फिर तो यह धारणा कि विज्ञान और धर्म कभी आपस में

सहमत नहीं हो सकते, बहुत ही उपहासजनक है। विज्ञान के परमेश्वर तथा धर्म के परमेश्वर के विषय में पाये जाने वाले गलत विचारों से विरोध तो हो सकता है और होता भी है परन्तु सच्चाई तो सच्चाई ही रहेगी। बुद्धि अपने बच्चों में दोषमुक्त ठहरती है।

दोषपूर्ण धर्म जैसे कि रोम द्वारा कोपरनिकस के सिद्धांत [कि पृथ्वी और अन्य ग्रह सूर्य के इर्द-गिर्द घूमते हैं] की निन्दा और गलीलियो गलीली के साथ किए गए दुर्व्यवहार से धर्म के विरोध में कई विद्वानों में पूर्वधारणा बन गई है। गलीलियो 1543 में निकोलस कोपरनिकस द्वारा सुझाए गए हीलियोसेन्ट्रिक वर्ल्ड सिस्टम (सूर्य-केन्द्रित) विश्व प्रबन्ध में दृढ़ विश्वास रखता था। 1616 में रोम के ''होली ऑफिस'' [पवित्र कार्यालय] ने कोपरनिकस के सिद्धांत के विरुद्ध आदेश जारी कर दिया क्योंकि उसका सिद्धांत कैथोलिक चर्च की संसार के पृथ्वी केन्द्रित होने की सोच के विपरीत था। गलीलियो के कार्यों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया और उसे ''विधर्म के प्रबल संदेह'' के लिए आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया, चाहे बाद में वह दण्ड शीघ्र ही घर में नज़रबन्दी में बदल दिया गया था।[1]

नकली वैज्ञानिकों ने भी कुछ धर्म विज्ञानियों को सच्चाई से दूर कर दिया है। परन्तु किसी भी क्षेत्र में हो सच्चाई तो सच्चाई ही है, बेशक कभी-कभी इसे पूर्वाग्रह या घृणा के कारण दबा दिया जाए। डॉ. स्पैरो ने कहा था ''सच्चाई की खोज करें; जब भी इसके पास आ सकें आएं, जो भी दाम चुकाना पड़े चुका दें।'' जो उससे भी बड़ा है उसकी प्रतिज्ञा है, ''तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा'' (यूहन्ना 8:32)। विज्ञान की तरह ही, धर्म की सच्चाई भी लोगों को अज्ञानता, अन्धविश्वास, बीमारियों और अन्धकार से छुड़ाती जा रही है।

परन्तु, ज़रूरी नहीं कि धर्म में सत्य कही जाने वाली हर बात मसीह की ओर से ही हो। यूहन्ना ने चेतावनी दी है, ''हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो: बरन आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यवक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं'' (1 यूहन्ना 4:1)। ऐसे ही पतरस ने भी कहा है, ''और जिस प्रकार उन लोगों में झूठे भविष्यवक्ता थे उसी प्रकार तुम में भी झूठे उपदेशक होंगे, जो नाश करने वाले पाखण्ड का उद्घाटन छिप छिपकर करेंगे और उस स्वामी का जिसने उन्हें मोल लिया है इन्कार करेंगे और अपने आप को शीघ्र विनाश में डाल देंगे'' (2 पतरस 2:1)। कोई धर्म प्रचारक जब यह दावा करता है कि परमेश्वर ने पृथ्वी को 4004 ई.पू. में बनाया था, तो उसका दावा निराधार होता है। परमेश्वर ने केवल इतना ही कहा है कि उसने इसे ''आदि में'' बनाया (उत्पत्ति 1:1), और यह आदि कब था हम नहीं जानते।

इसी प्रकार विज्ञान में सत्य कही जाने वाली हर बात विज्ञान नहीं होती है। बहुत सी ऐसी बातों का पता चला है जो विज्ञान (वास्तविक ज्ञान) नहीं, बल्कि मनुष्य की कल्पना ही हैं। एक समय था जब अपने आप अस्तित्व में आई पीढ़ी को विज्ञान के अनुसार माना जाता था। किसी समय सम्भव लगने वाली इस थ्योरी को वी. जे. ओ'ब्राइन ने ''कीचड़ और मिट्टी से मेंढकों, मक्खियों डांसे; बछड़े के मांस से मधुमक्खियों; खच्चर के मांस से गुबरलों; केकड़ों से बिछुओं'' का नाम दिया। यदि ''बाइबल में बताई जीवन की सृष्टि की पुरानी कहानी'' में

विश्वास न रखने की बात सीखकर किसी ''जागृत'' मसीही द्वारा उस झूठे ज्ञान को मान लेना, आज उस मसीही की अपने प्रभु के प्रति कितनी वफादारी दिखाता है ? हमें लगेगा कि ऐसे व्यक्ति ने ''विज्ञान को'' अपना ईश्वर मान लिया है और यह कि यदि मसीह इस योजना में फिट बैठे तो वह उसे भी स्वीकार कर लेगा; वरन वह मसीह को नकार देगा। ''स्वीकृत विज्ञान'' यदि अपनी बात से मुकर जाए तो वह अविश्वासी कितना परेशान होगा!

विज्ञान मुकर गया है। इसने अपने आप अस्तित्व में आई पीढ़ी की बात नकार दी थी। विज्ञानियों ने माना कि वे गलत थे। ऐसे मुकर जाना कुछ लोगों के लिए, उनकी आशाओं के विपरीत हो गया, परन्तु, उनके लिए ऐसा करना आवश्यक था। थॉमस एच. हर्शले ने लिखा है, ''यह शिक्षा कि जीवन केवल जीवन से ही आ सकता है हर हाल में मानने योग्य है।'' उन्होंने इस वैज्ञानिक भ्रम को इसलिए नहीं नकारा है कि बाइबल सिखाती है कि हर प्रकार का जीवन उसी से मिलता है जिसमें हम ''जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं'' (प्रेरितों 17:28), बल्कि केवल इसलिए कि प्रकृति के प्रमाणों से ऐसा पता चलता है। एक मसीही के लिए, मसीह अर्थात सृष्टि के प्रभु और हमारे अपने भाई में विश्वास करना, सारी सच्चाई का मापदण्ड है। यदि आज का ''स्वीकृत विज्ञान'' मसीह के विरुद्ध है, तो एक विश्वासी चेले को परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। यह तो पहले भी उसके विरुद्ध ही था, परन्तु ''यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक सा है'' (इब्रानियों 13:8)।

अधर्मी पियरे साइमन डे लैपलेस (1749-1827) द्वारा उत्पत्ति की पुस्तक की सच्चाई को नकारकर सृष्टि की रचना की अपनी ''नेब्युलर हाइपोथिसिस'' का विकल्प देने पर, बहुत से लोग उलझन में पड़ गए थे। क्योंकि बहुत से वैज्ञानिक जैसे प्रकृति के साथ चलते थे वैसे परमेश्वर के साथ नहीं चलते थे, क्योंकि उन्होंने बाइबल को ऐसे नहीं पढ़ा था जैसे वे प्रतिदिन मनुष्य की लिखी पुस्तकों को पढ़ते थे, इसलिए वे इस नई शिक्षा से पूरी तरह सम्मोहित हो गए। इससे न केवल खगोल विज्ञान ही प्रभावित हुआ बल्कि भू-विज्ञान भी इसी पर आधारित था। डब्ल्यू. डब्ल्यू. हेरिंग ने कहा है, ''एक सौ वर्ष तक इस पर गम्भीरता से कोई प्रश्न नहीं किया गया।'' फिर भी, बाइबल के विनम्र विश्वासी परेशान नहीं हुए, क्योंकि उनका विश्वास ''मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, बल्कि परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर'' था (1 कुरिन्थियों 2:5)।

किसी समय फलित-ज्योतिष को ''विज्ञान'' कहा जाता था। प्रत्येक न्यायालय में आकाश की ओर देखकर भविष्य बताने वाले भाड़े पर मिल जाते थे। रोलिन टी. चेम्बरलिन ने बताया था कि तीस वर्षों तक युद्ध के दौरान राजकीय सेनाओं का खानाबदोश फील्ड मार्शल आलब्रेट वालेनस्टेन ''अपने ज्योतिषी पर अधिक निर्भर था जिसे वह हमेशा अपने साथ रखता था।'' यहां तक कि प्रसिद्ध ज्योतिषी, जोहानस कैपलर ने वालेनस्टेन की जन्मपत्री भी बनाई थी। परन्तु जैसे कि हेरिंग ने ध्यान दिलाया कि इन जन्म पत्रियों से इस सेनापति को 1634 में एगर नामक स्थान में होने वाली उसकी हत्या की चेतावनी न दी जा सकी।

कभी-कभी न केवल विज्ञान के गलत विचारों को बल्कि बाइबल की शिक्षा से तोड़ मरोड़कर बनाए गए बनावटी विचारों को भी त्याग दिया जाता है। कुछ लोगों का यह विचार

कि संसार का अन्त पहली शताब्दी में ही हो जाएगा, नये नियम के लेखकों की उस बात को गलत समझने के कारण था, न कि नये नियम की बात में किसी त्रुटि के कारण। बहुत से लोगों द्वारा यह मानकर कि उन्हें बाइबल का समर्थन प्राप्त है, यह सोचने पर कि 1000 ई. में संसार का अन्त हो जाएगा, अपने बचाव में कहना पड़ा कि उन्होंने बाइबल की बात का गलत अर्थ निकाला है। 1843 में विलियम मिलर के अनुयायी ऊपर बादलों में उठाए जाने के अपने कपड़े पहनकर उतनी ही निष्कपटता से कार्य कर रहे थे जितनी निष्कपटता से जैविक विकासवाद में विश्वास रखने वाले करते हैं। प्रकृति को बिगाड़ने वाले विकासवादियों की तरह उन एडवेंटिस्टों ने भी बाइबल की गलत व्याख्या की थी।

सच्चे विज्ञान और सच्चे धर्म में से अधिक आवश्यक कौन सा है ? विज्ञान की प्राप्ति चाहे कुछ भी क्यों न हो, परन्तु उसे जीवन का अन्तिम लक्ष्य कभी नहीं माना जा सकता। विज्ञान की एक सीमा है; अर्थात यह केवल प्रकृति से सम्बन्धित बातें ही बता सकता है। क्योंकि मनुष्य तो जानवर से ऊपर है इसलिए प्रकृति विज्ञान से मनुष्य की सभी आवश्यकताएं कभी पूरी नहीं की जा सकती हैं। विज्ञान के लड़खड़ाने पर धर्म ही मनुष्य को एक बड़े भाई की तरह उठाता है। धर्म वह काम करता है जिसे विज्ञान कभी नहीं कर सकता। विज्ञान का सम्मान किया जाना चाहिए परन्तु धर्म उससे भी अधिक सम्माननीय है। हम विज्ञान के दान की ''सच्चे मन से लालसा करते'' हैं, परन्तु ''और भी उत्तम मार्ग'' है। डॉक्टर हेंगरी लिंक का कहना है कि विज्ञान की अवधारणाओं ने उसे धर्म से दूर कर दिया; लेकिन विज्ञान को गहराई से समझने पर वह धर्म में फिर लौट आया और उसे इसकी उत्तमता का अहसास हुआ।

> भौतिक विज्ञान से मनुष्य जाति को मिलने वाले महान लाभों अर्थात एक लम्बा जीवनकाल और अधिक सुविधाजनक जीवन, शारीरिक पीड़ाओं से भी मुक्त जीवन, और असंख्य दिलचस्प वस्तुओं तथा शैक्षणिक अनुभवों से भरे जीवन के बाजवूद इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि लोग अधिक प्रसन्न हैं, कि परिवार अधिक संयुक्त हैं, कि सरकारें या राजनीतिक दल अधिक समझदार हो गए हैं या राष्ट्र अब युद्ध लड़ने की इच्छा नहीं रखते।[2]

दो हज़ार वर्षों के बाद, मनोविज्ञान ने सीख लिया है कि प्रसन्नता केवल आत्म बलिदान अर्थात अपना इनकार करने से ही मिलती है। मित्र पाने के लिए, मित्र बनना आवश्यक है परन्तु यही आग्रह तो यीशु करता आ रहा है।

पाद टिप्पणियां

[1]द 1997 *ग्रोलियर मल्टीमीडिया इन्साइक्लोपीडिया,* s.v. "Galileo," "Copernicus." [2]हेनरी सी. लिंक, *रिटर्न टू रिलिजन* (न्यूयार्क: मैकमिलन कं., 1936), 14-15.